सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाएँ
(Processes Of Social Change)

परिवर्तन प्रकृति का एक शाश्वत एवं अटल नियम है। मानव समाज भी उसी प्रकृति का अंग होने के कारण परिवर्तनशील है। समाज की इस परिवर्तनशील प्रकृति को स्वीकार करते हुए मैकाइवर लिखते हैं 'समाज परिवर्तनशील एवं गत्यात्मक है।" बहुत समय पूर्व ग्रीक विद्वान हरविलीटस ने भी कहा था 'सभी वस्तुएँ परिवर्तन के अधीन हैं।" उसके बाद से इस बात पर बहुत विचार किया जाता रहा है कि मानव की क्रियाएँ क्या और कैसे परिवर्तित होती हैं? समाज के वे कौन विशिष्ट स्वरूप हैं जो व्यवहार में परिवर्तन को प्रेरित करते हैं? समाज में आविष्कार परिवर्तन कैसे लाते हैं एवं आविष्कार करने वालों की शारीरिक विशेषताएँ क्या होती हैं? परिवर्तन को शीघ्र ग्रहण करने एवं ग्रहण न करने वालों की शरीर रचना में क्या भिन्नता होती है? क्या परिवर्तन किसी निश्चित दिशा से गुजरता है? यह दिशा रेखीय है या चक्रीय? परिवर्तन के सन्दर्भ में इस प्रकार के अनेक प्रश्न उठाये गये तथा उनका उत्तर देने का प्रयास किया गया। मानव में परिवर्तन को समझने के प्रति जिज्ञासा पैदा हुई। उसने परिवर्तन के कारणों का ढूँढने उसकी दिशा का पता लगाने और परिवर्तन पर नियन्त्रण पाने का प्रयास किया।

दूसरी ओर पारमेनाडेस जैसे विचारक भी हुए हैं जो परिवर्तन के तथ्य से इन्कार करते हैं। उनका विश्वास था कि संसार की प्रत्येक वस्तु वैसी की वैसी ही बनी रहती है, उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता, परिवर्तन तो एक भ्रम है, किन्तु आज कोई भी व्यक्ति पारमेनाडेस के इन विचारों से सहमत नहीं होगा। आज विश्व का कोई भी समाज ऐसा नहीं है जो परिवर्तन के दौर से न गुजरा हो। जनसंख्या एवं समूह के आकार में वृद्धि, अर्थव्यवस्था में परिवर्तन, मानव द्वारा घुमन्तू जीवन त्यागकर स्थायी रूप से बसना, विज्ञान के विकास, नवीन दर्शन एवं धर्मों के उदय, युद्ध एवं अकाल आदि के कारण समाज में परिवर्तन होते रहते हैं। स्थिर समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती। यह हो सकता है कि भिन्न-भिन्न समाजों में परिवर्तन की गति, दिशा, दर, प्रकार एवं स्वरूप में अन्तर हो।[1] परिवर्तन की गति कहीं मन्द तो कहीं तीव्र हो सकती है। आदिम समाजों में परिवर्तन धीमी गति से हुए हैं, जबकि आधुनिक औद्योगीकृत समाजों में परिवर्तन का प्रवाह तेज रहा है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि हर समाज परिवर्तन के दौर से गुजरता रहा है।

परिवर्तन क्यों और कैसे होते हैं, ये प्रश्न आज भी पूरी तरह हल नहीं हो पाये हैं। अंग्रेज कवि लॉर्ड टेनिसन का मत है, "प्राचीन क्रम में नये को स्थान देने के लिए परिवर्तन होता है।" प्रो. ग्रीन लिखते हैं, "सामाजिक परिवर्तन इसलिए होता है क्योंकि प्रत्येक समाज असन्तुलन के निरन्तर दौर से गुजर रहा है। कुछ व्यक्ति एक सम्पूर्ण सन्तुलन की इच्छा रख सकते हैं तथा कुछ इसके लिए प्रयास भी करते हैं।"[1] सामाजिक परिवर्तन एक अवश्यम्भावी तथ्य है।

1 A.W. Green Sociology p 615